(यह पुस्तक 'प्रेम रहस्य' संभवत: अक्तूबर 1970 में ही छपी थी. यह अपने मूल रूप में एक लघु पुस्तक या पंफ़लेट के रूप में थी. इसकी भूमिका श्री नारायण दास डोगरा ने लिखी थी. बाद में इस पुस्तक को भगत मुंशीराम जी की पुस्तक 'प्रेम वाणी' के प्रथम खंड के रूप में भी छापा गया था.)

प्रेम रहस्य

सत्संग परम दयाल जी महाराज , मानवता मन्दिर , होशियारपुर . (26.10.70)

सत्संग में दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज का यह शब्द पढ़ा गया.

प्रेम का सौदा करो तुम, प्रेम के व्यवहार में,
हानी और घाटा नहीं है, प्रेम के व्यापार में .
प्रेम में है स्वाद अद्भुत, प्रेम का प्याला पियो,
होके मतवाला विचरना, सीखो इस संसार में .
प्रेम से मन जीत लो, सब से निराला शस्त्र है,
जीत समझो अपनी पक्की, जय है उसकी हार में .
मेरे दाता प्रेम दे अपना, न दे तू कुछ मुझे,
इसमें सुख है, मीठा रस मिलता है इसकी मार में .
राधास्वामी ने बताया, प्रेम की नवका चढ़ो,
पार जाओ, डूबते हो क्यों पड़े मझधार में .

दूसरा शब्द यह पढ़ा गया.

प्रेम जिसके मन में आया, प्रेम से प्रेमी बना,
संयमी है प्रेम का वह, प्रेम का नियमी बना.
योग क्या है? प्रेम है, वेदान्त क्या है? प्रेम है,
शान्त क्या है? प्रेम है, निर्भ्रान्त क्या है? प्रेम है .
प्रेम है आनन्द यह, आनन्द का भण्डार है,
प्रेम ही को सत्य समझो, प्रेम सब का सार है.
प्रेम से अन्तःकरण हो शुद्ध, निर्मल बुद्धि हो,
कब अशुद्ध रह सकेगी, प्रेम की जब शुद्धि हो.
नित्य है वह प्रेम मुक्ति, प्रेम के आधीन है,
ज्ञान भक्ति शक्ति युक्ति, प्रेम के आधीन है.
प्रेम की विद्या अविद्या रोग की है औषधी,
क्या कहूँ कि यह, सोग की है औषधी.

प्रेम का प्याला पिया जिसने, वह मतवाला बना,
दुरमति जाती रही, भोला बना बाला बना.
कैसी पूजा पाठ संध्या, कैसे धर्म और कर्म अब,
हट गए झगड़े मिला है, प्रेम का सत मर्म अब.
प्रेम है आनन्द दाता, प्रेम का प्याला रसाल,
मांगता है उसके बदले, शीश तन मन को कलाल.
जीते जी मर जाना हो, इस रास्ते में आओ तुम,
सहज में शम दम तितिक्षा, मुक्ति के फल पाओ तुम .
काग से कोयल बनो, बगले से हो जाओ हंस,
थोड़ा ही जो हाथ आ जाये, तुम्हारे प्रेम अंश.
प्रेम प्रेमी और प्रीतम, को मिला करता है एक,
प्रेम ही है ज्ञान धन, अरु प्रेम ही सच्चा विवेक.
प्रेम ही सुमिरन भजन है, प्रेम ही है ज्ञान ध्यान,
कर लो संगत प्रेमियों की, कुछ दिनों इसको पिछान.
प्रेम भव से पार ले जाने का नवका बन गया,
चित्त की दुचिताई हटी, दुविधा मिटी तन मन गया.
राधास्वामी प्रेम के हैं सिंधु और हम बूंद हैं,
बूंद जब उसमें मिला, तब फिर कहां 'तू' और 'मैं'.

राधास्वामी! जीवन धुन किसी खोज में बालपन में इस ओर निकली थी. कई बार विचार किया करता था कि यह जीवन बनाया किस ने ? जीवन के बनाने से क्या अभिप्राय है? मेरा जीवन क्यों बना? अच्छा बन गया, फिर जीवन क्या चाहता है? काश! कभी कोई मानव अपने अन्तर यह सोचे कि मैं क्यों बना था? कहां से आया हूँ? यदि बुद्धि से मान लिया जाए कि मैं माँ के उदर से आया हूँ तो इससे एक बौद्धिक शांति मिलती है. मैं प्रायः कहता रहता हूँ कि मैं स्पर्मेटोरिया जर्म कीटाणु से बना जो पिता के वीर्य में कीड़ा था. फिर यह कहता हूँ कि वह कीड़ा उस अन्न से बना जो पिता ने खाया, फिर कहता हूँ अन्न सूर्य-चांद की उष्णता और शीतलता से बना, फिर कहता हूँ प्रकाश ने शब्द को बनाया, फिर कहता हूँ वह ज़ात है. ऐसी-ऐसी बातें कहता रहता हूँ, तो इस अनुभव से एक बौद्धिक शांति मिलती है. वास्तविक शांति नहीं मिलती. यह जीवन और अनुभव की शांति है, समझ की शांति है. वास्तविक शांति क्या है? मैं यह 83 वर्ष की आयु के पश्चात कह रहा हूँ और यह अब स्पष्ट हो रहा है. मैं मालिक की खोज में निकला था, उस खोज के क्रम में मैंने क्या किया? जो वस्तु मेरे अन्तर में है, जिस से प्रेम निकलता है जिस अस्तित्व का प्राकट्य होता है. वह जो अस्तित्व का प्राकट्य मेरे अन्तर है यदि मेरा शरीर है तो शरीर की गति उसका प्राकट्य है, यदि मेरा मन है तो मेरे अन्तर से जो संकल्प निकलते हैं वह मेरा प्राकट्य हैं. यदि मैं प्रकाश हूँ तो प्रकाश मेरे अन्तर से निकलता है, वह मेरा प्राकट्य है. यदि मैं शब्द हूँ, यदि शब्द की जगह मैं यह कहूँगा कि जब मैं शरीर में हूँ तो शरीर की गति मेरा प्राकट्य है. मन में हूँ तो मन मेरा प्राकट्य है. प्रकाश में हूँ तो प्रकाश मेरा प्राकट्य है. और जब मैं शब्द में हूँ तो शब्द मेरा प्राकट्य

है. वह जो मेरा शारीरिक, मानसिक, आत्मिक या शब्द का प्राकट्य है और जो प्राकट्य की गति है वह क्या है? वह मेरी समझ में प्रेम है. प्राकट्य ही प्रेम है. प्रेम कहते हैं किसी वस्तु का किसी ओर खिंच जाना, किसी वस्तु का किसी ओर चलना या उससे मिलना प्रेम है. पुरुष का मन स्त्री की ओर, बच्चे की ओर, धन की ओर या गुरु की ओर खिंचता है कि नहीं. वह प्रेम है. एक दृष्टि से सारा जीवन आदि से अन्त तक क्या है? यह प्रेम है. क्योंकि हमारे अस्तित्व के अन्दर चाहे वह शारीरिक हो, चाहे वह मानसिक या आत्मिक और चाहे वह सुरत का हो, उसका प्रकाशन होता रहता है. यदि वह प्रकट हुई वस्तु यानि प्रेम किसी के साथ जुड़ता रहता है, तब जिसकी ओर वह चलता है, 'है पने' का प्रकाशन जुड़ता रहता है वह सुख का कारण बनता रहता है. तुम बच्चे को प्रेम करते हो तुम को आनन्द मिलता है. तुम स्त्री से प्रेम करते हो तुम को आनन्द मिलता है. तुम गुरु से प्रेम करते हो, तुम को आनन्द मिलता है. तुम अपने अन्तर किसी विषय या किसी विचार के साथ अपने मन के प्राकट्य को लगाते हो तब तुम को आनन्द मिलता है. तुम प्रकाश रूप होते हुए प्रकाश के साथ लगते हो तो तुम को आनन्द मिलता है. तुम्हारी सुरत अपने ही साथ मिलती है, तब तुम को आनन्द मिलता है. तब क्या प्रमाणित हुआ? कि यह समस्त जीवन ही प्रेम का रूप है. जिन व्यक्तियों को अपने शारीरिक, मानसिक और आत्मिक जीवन और प्रकाश के जीवन को कहीं लगाने और ठहराने की टेव या आदत है वे इस संसार में सुखी रहते हैं. क्यों ग़लत कहा मैंने? तो प्रेम का एक रूप नहीं है. यही प्रेम हम को गृहस्थ में सुख देता है, यही प्रेम हम को मन के विचारों में सुख देता है. लड़का विद्या प्राप्त करता है, जो उसका विषय है वह उसके साथ विचारों को लगाता है. तो विद्या प्राप्त करने वाले को आनन्द मिलता है. यह जितना संसार है, सब प्रेम है. प्रेम तो मैंने बता दिया. अब प्रेम के रूप को ले लें. हम जब संसार में प्रेम करते हैं तो बहिर्मुखी संसार में आनन्द लेते हैं. परन्तु जिस के साथ हम जुड़ते हैं, वह वस्तु कुछ समय के पश्चात नष्ट हो जाती है. तब हम को जो आनन्द मिलता था वह टूट जाता है. एक विचार उठता है उस विचार के साथ हम प्रेम करते हैं. उसमें हमें आनन्द मिलता है. परन्तु समय आने पर वह विचार टूट जाता है. इस लिये सन्तों ने संसारियों के लिए यह कहा है कि जब तक शरीर है प्रेम करो. परन्तु जब वह वस्तु जिससे तुम प्रेम करते हो टूट जाए या न रहे तो उस प्रेम के लगाव को वहां से हटा कर दूसरी ओर ले जाओ. सब से अन्तिम प्रेम क्या है? उससे प्रेम करना जहां से तुम बने थे. जहां से तुम्हारा अस्तित्व बना था. परन्तु वहां जाने के लिए बहुत अनुभव की आवश्यकता है. जिस व्यक्ति ने संसार में प्रेम करना नहीं सीखा, जिसको अपना मन बाहर जोड़ने की टेव या आदत नहीं है या दूसरे शब्दों में जिसको इश्क मजाज़ी नहीं है (मजाज़ी कहते हैं दो भागों के अन्तर को अर्थात प्रकृति के किसी भाग से प्रेम करना इश्क मजाज़ी है) जिस वस्तु को उसने बाहर में जोड़ा हुआ है, जिसको कि बाहर में प्रेम करने की टेव या आदत नहीं हैं यदि वह चाहे कि अपनी विचारधारा या वृत्ति को अन्तर में किसी इष्ट के साथ जोड़ कर प्रेम करे तो वह ऐसा नहीं कर सकता. क्योंकि उसको बाहर प्रेम करने की टेव या आदत नहीं है. इसलिए उसको जीवन में अशांति रहेगी. इसलिए इस संसार में उस मालिक तक वही पहुँच सकता है जिसको सांसारिक जीवन में प्रेम करने की टेव या आदत है जिसने इश्क मजाज़ी नहीं किया, वह इश्क हक़ीक़ी भी नहीं कर सकता. उसको आनन्द नहीं मिलेगा क्योंकि उसकी वृत्ति को बाहर ठहरने का अवसर नहीं मिला. क्योंकि बाहर की सभी वस्तुएँ समय आने पर बदल जाती हैं इसलिए बाहर में जो व्यक्ति

अपने घर में रह कर अपने संबंधियों से प्रेम करने की टेव या आदत नहीं डालता, वह लाख सिर पटक कर मर जाए वह अपने अन्तर में वृत्ति ठहराने, शब्द सुनने और प्रकाश को देखने का प्रयत्न भी करता रहेगा, तो वह गिरता रहेगा. यह मेरे जीवन का अनुभव है. पुरुषोत्तामदास! क्या कहा मैंने. इसलिये संसार में सब से पहला काम यह होना चाहिए कि जब बच्चा संसार में उत्पन्न होता है तब उसको यह शिक्षा मिलनी चाहिए कि वह अपने संबंधियों से सच्चा प्रेम करे.

दूसरी बात यह है कि वह अपने व्यवहार में जो काम करता है उस काम में उसकी वृत्ति लगाने की टेव या आदत हो. काम करता हुआ वह काम में इतना लीन हो जाए कि वह दूसरी सभी बातों को भूल जाए. जो व्यक्ति संसार में रहता हुआ अपने बन्धुओं से प्रेम नहीं करता और जो काम करता हुआ अन्य बातों को नहीं भूलता वह अपने अन्तर मालिक से प्रेम कर ही नहीं सकता और न वह अपने घर ही जा सकता है. हजूर दाता दयाल जी वर्णन किया करते थे कि जिसका सांसारिक जीवन सफल नहीं है वो संसार में सुखी नहीं रह सकता, यदि वह बाहर में प्रसन्न नहीं रह सकता तो वह अपने अन्तर मालिक को भी नहीं मिल सकता. उसका मन छलांगें मारता रहेगा. प्रसन्न रहना ही जीवन की सफलता है. मैं व्यावहारिक जीवन और रहनी की शिक्षा दे रहा हूँ. मैं अपनी 83 वर्ष की आयु के पश्चात कह रहा हूँ कि जिस व्यक्ति का व्यवहार ही ठीक नहीं, जिसका संसार ही ठीक नहीं उसका परमार्थ कभी ठीक नहीं होगा. अब उदाहरण सुनो. यह श्रीमती शांति देवी जी बैठी हैं. ये कहती हैं कि बाबा जी मुझे सब पर क्रोध आता है. इनको क्रोध क्यों आता है? इसलिए कि जिन पर इनको क्रोध आता है उनके साथ प्रेम करके अपनी वृत्ति को ठहराने की टेव या आदत नहीं है. इसका परिणाम यह होता है कि जब ये अपने अन्तर जाती हैं तो मन ठहरता नहीं, चंचलता रहती है. मैं तुम लोगों को यह व्यावहारिक जीवन का पाठ पढ़ा रहा हूँ. क्रोध है क्या? वृत्ति का किसी एक स्थान पर न जमना ही क्रोध है. जब तुम किसी स्थान पर अपनी वृत्ति को लगा नहीं सकते, तुम्हारी वृत्ति वहां ठहरती नहीं क्योंकि तुम को टेव या आदत नहीं है, जब किसी कारणवश वहां से तुम्हारी वृत्ति हट जाती है तो उस आवेश का नाम क्रोध है. तुमने कोई काम किया और मुझे क्रोध आ गया. किस लिए आया? क्योंकि तुम्हारे उस काम से मैंने प्रेम नहीं किया. मैं उसके साथ लगा नहीं. मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा. मैं कह जाना चाहता हूँ कि जिस व्यक्ति को अपने काम में पूरा ध्यान देकर प्रसन्नता और आनन्द लेने की टेव या आदत नहीं है वह चाहे किसी प्रकार का भी व्याख्यान दे, संत और परम सन्त कहलाये, वह अपने अन्तर में उस आदि अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकता, नहीं कर सकता, नहीं कर सकता. इसका निर्णय वे करेंगे जो सच्चे हैं और संसार चक्र से निकलना चाहते हैं और परम शांति के इच्छुक हैं. करतार की माँ निर्णय करेगी. दूसरे जो भाषण को सुनें या पढ़ें वे अपने अन्तर आप निर्णय करें.

प्रेम का सौदा करो, तुम प्रेम के व्यवहार में,
हानि और घाटा नहीं है, प्रेम के व्यापार में.
प्रेम में है स्वाद अद्भुत, प्रेम का प्याला पियो,
हो के मतवाला विचरना, सीखो इस संसार में.

तुम माताएं हो. तुम्हारे छोटे-छोटे बच्चे होते हैं. वे चलते हैं. तुम्हारी वृत्ति उनके साथ लगी रहती है. क्या तुम को उससे आनन्द नहीं मिलता? तुम बाल बच्चेदार हो, तुम को स्वाद और आनन्द

नहीं मिलता? प्रसन्नता कहां है? प्रेम के व्यवहार में. वह जो अन्तर का व्यवहार है वह कुछ और वस्तु है. यदि आनन्द लेना चाहते हो तो संसार में जीना सीखो. इस शब्द में हजूर दाता दयाल जी ने यही कहा है कि व्यवहार में प्रेम करना सीखो. अपने घरों में रहते हुए अपने पड़ोसियों से प्रेम करना सीखो. जब तक किसी को यह टेव या आदत नहीं है और वह चिड़चिड़ा व्यक्ति है, उसको क्या मिलेगा? वह दुखी और अशांत रहेगा. हमारे पिता जी ने भूमि बेच डाली, एक मकान बेच दिया. मैंने उनसे कहा कि ले जाने दो और तुम छोड़ दो. पूर्ण रूप से तो प्रेम का व्यवहार नहीं कर सका परन्तु बहुत सीमा तक मैंने प्रेम का व्यवहार किया है. पुरुषोत्तमदास जी जानते हैं मेरी अवस्था को. जब मैं बसरा बग़दाद (इराक़) में था. मैं रेलवे में स्टेशन मास्टर रहा. तुम लोगों से मिलता हूँ. सभी लोग आकर्षित होते हैं. जिनके साथ मुझे बातचीत करने का अवसर मिलता है. उसमें मुझे क्या मिलता है? मुझे प्रेम और प्रसन्नता मिलती है. क्योंकि मैं संत सत्गुरु वक़्त हूँ. मुझे दाता दयाल जी ने डयूटी लगाई थी कि शिक्षा को बदल जाना. इसलिये कहे जाता हूँ कि जिसका अपना व्यवहार ठीक नहीं है, अपने परिवार के साथ, अपने कुटुम्ब के साथ, व्यवहार प्रेममय नहीं है, वह मालिक से भी प्रेम नहीं कर सकता, नहीं कर सकता, नहीं कर सकता. वैसे चाहे वह निस्संदेह कह दे कि मैं पहुंचा हुआ हूँ. यह क्रियात्मक जीवन का पाठ है जिससे तुम्हारा जीवन सुखमय हो जाएगा. हम लोग स्वार्थी हैं. मैं कहा करता हूँ कि जितना जिससे लेना है वह लेना ही है और जितना जिसका देना है वह भी देना ही है.

सन्त शत्रुओं से भी सदा प्रेम करते हैं. जो उनके विरोधी होते हैं उनसे भी प्यार करते हैं. यह है प्रेम का सौदा. प्रेम क्यों किया जाता है और प्रेम क्या है यह मैंने संक्षेप में उसकी वास्तविकता और आवश्यकता बता दी.

प्रेम से मन जीत लो, सबसे निराला शस्त्र है,
जीत समझो अपनी पक्की, जय है उसकी हार में.

जीत में क्या होता है? जब तुम मुक़द्दमा जीत जाते हो तो तुम को क्या मिलता है? आनन्द मिलता है, प्रसन्नता मिलती है. तो प्रेम में जीत ही है न. तुम प्रेम करते रहोगे, तुम को प्रसन्नता मिलती रहेगी.

मेरे दाता प्रेम दे अपना, न दे तू कुछ मुझे,
इसमें सुख है, मीठा रस मिलता है इसकी मार में.

यह शब्द हमारे संसार के व्यवहार और प्रेम के लिए है. और प्रेम में ही सब कुछ है. प्रेम में एक अद्भुत आनंद है और प्रसन्नता मिलती है. इस प्रेम की जो मार है उसमें भी रस अर्थात आनन्द है.

प्रेम जिसके मन में आया, प्रेम से प्रेमी बना,
संयमी है प्रेम का वह, प्रेम का नियमी बना.

जिसके हृदय में प्रेम आ गया वही प्रेमी कहलाता है. प्रेम में नियम और संयम सब आ जाते हैं. मन को अधिक रोकने और जप-तप करने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती. क्योंकि प्रेम से हम को सुख मिलता है. मैंने शिक्षा को बदला और 'मनुष्य बनो' की पुकार की. सब से पहले हमारा जो संसार का व्यवहार है जो बहिर्मुखी व्यवहार है वह ठीक हो. जब व्यक्ति को बाहर में प्रेम करने की टेव या आदत हो जाएगी तो फिर अध्यात्म की ओर जाएगा. यह प्रेम का मार्ग है.

योग क्या है? प्रेम है, वेदान्त क्या है? प्रेम है,

शास्त्र क्या है? प्रेम है, निर्भ्रान्त क्या है? प्रेम है.
जब तुम्हारे मन को बाहर प्रेम करने का अभ्यास हो जाएगा तो जब भी तुम अन्तर में योग करोगे अर्थात अपने अन्तर में राम का या कृष्ण का ध्यान करोगे या प्रकाश को देखोगे या कोई और वस्तु को देखोगे तो तुम्हारा मन वहां लग जाएगा. योग भी प्रेम के बिना नहीं आता. इसलिए हिन्दुओं ने ये धर्म बनाए हुए हैं. मेरा यह अनुभव है कि जिसके व्यवहार में प्रेम नहीं, जो व्यक्ति घर में लड़ाई करता रहता है, जिसके अन्तर द्वेष और घृणा है, जो बाहर में लड़ाई-झगड़ा करता है, मुक़द्दमा बाज़ी में फंसा रहता है, उसको कभी अपने अन्तर में प्रेम करना आ नहीं सकता. पं. नारायणदास, क्या ठीक कह रहा हूँ या ग़लत कह रहा हूँ? तब योग क्या है? प्रेम है. प्रेम की व्याख्या मैंने पहले ही निराले ढंग से कर दी. प्राणी को क्यों घर वालों पर क्रोध आता है? क्यों अशांत होता है? क्योंकि व्यवहार में प्रेम करने की टेव या आदत नहीं है. मुझ में यह टेव या आदत थी. मेरी स्त्री की कई ऐसी आदतें थीं जिनको संसारी पति पसन्द नहीं कर सकता. परन्तु मैंने उससे प्रेम किया. मेरी लड़की आधी उन्मत्त है. वह ऊटपटांग बात कह देती है. यदि कोई और हो तो क्रोध करने लगे परन्तु मैं क्रोध में नहीं आता और प्रेम करता हूँ. श्री गोपाल दास जी की कई बार चित्त वृत्ति बदल जाती है तो मैं उसकी ओर ध्यान नहीं देता. उससे प्रेम करता हूँ. यह अमर सिंह जी कई बार ग़लती खा जाते हैं. मैं उस ग़लती को नहीं देखता बल्कि प्रेम करता हूँ. हमारे अन्नदाता ने ग़लतियां खाईं, मैं उसकी ग़लती नहीं देखता. मैं इनसे प्रेम करता हूँ. जिसको बाहर में प्रेम करने की टेव या आदत नहीं है, वह अन्तर में भी प्रेम नहीं कर सकता. इस लिए बाह्य गुरु से बाहर प्रेम किया जाता है.

प्रेम है आनन्द, वह आनन्द का भण्डार है,
प्रेम ही को सत्य समझो प्रेम सब का सार है.

प्रेम ही आनन्द है. तुम को बाहर से कोई वस्तु मिल गई या तुम को सुख मिल गया तो तुम कितने प्रसन्न होते हो. उस आनन्द और प्रसन्नता का प्रमाण देता हूँ. प्राणी के अन्तर ही प्रेम का भण्डार है. कहीं उसको अन्तर के भण्डार का पता चल जाए, प्रकाश आ जाए, गुरु स्वरूप मिल जाए या शब्द खुल जाए तो उसके आनन्द का क्या अनुमान होगा. मैं तुमको व्यावहारिक जीवन का पाठ सिखा रहा हूँ. तुम पर अहसान नहीं कर रहा. मैंने प्रण किया था कि अनुभव कह जाऊंगा. प्रेम में आनंद है और प्रेम आनन्द का भण्डार है. अपनी वृत्तियों को बाहर में संसार के साथ और अन्तर में अपने इष्ट के साथ जोड़ना ही प्रेम है.

प्रेम से अन्तःकरण हो शुद्ध, निर्मल बुद्धि हो,
कब अशुद्ध रह सकेगी, प्रेम की जब शुद्धि हो.

तुम माताएं हो. यूं किसी का मलमूत्र पड़ा हो, तो नाक भौं सिकोड़ कर एक ओर हो जाती हो. किसी का थूक पड़ा हो तो पीछे हट जाती हो. परन्तु तुम्हारे बच्चे या पति के, जब वह बीमार पड़ा हुआ हो, मल से क्या तुम को घृणा आती है. तुम प्रेम से उसको साफ़ करती हो. यूं तो दुर्गन्ध से पीछे हट जाओगी परन्तु जब तुम्हारा बच्चा चौका मैला कर देता है तो तुम्हारा चौका अशुद्ध हो जाता है परन्तु तुम ऐसा नहीं समझतीं. क्योंकि प्रेम से शुद्धि है. क्या कहा मैंने? मैंने तुम्हें तुम्हारे प्रतिदिन के जीवन का उदाहरण दे दिया. क्योंकि बच्चे से तुमको प्रेम है इसलिए उसकी दुर्गन्ध से भी तुमको घृणा नहीं है. यह है प्रेम की शुद्धि. प्रेमी अपने प्रियतम के किसी अवगुण को नहीं देखता. इस भांति

जो मालिक से प्रेम करने वाले हैं वे समझते हैं कि यह समस्त संसार उस मालिक का बनाया हुआ है. वे सब कुछ ईश्वर का ही समझते हैं. सब कुछ मालिक की मौज समझते हैं. इसलिए उनको इस समझ और प्रेम के कारण कोई दुख नहीं होता.

नित्य है वह प्रेम मुक्ति, प्रेम के आधीन है,
ज्ञान भक्ति शक्ति युक्ति, प्रेम के आधीन है.

शक्ति कैसे प्रेम के अधीन है? मुर्गी का अपने बच्चों से प्रेम है. यदि कुत्ता या कोई और पशु उनको मारने के लिए दौड़े तो वह मुर्गी उस पर आक्रमण कर देती है. उसकी शक्ति कहाँ से आई? बच्चों से प्रेम होने के कारण मुर्गी में शक्ति आई. एक सैनिक जिसको अपने देश से प्रेम है रणभूमि में जाकर देश प्रेम में आकर ऐसी वीरता का काम कर दिखाता है जैसा कि उसने अपने जीवन में कभी न किया हो. सोहनी का महीवाल से प्रेम था. कच्चे घड़े पर तैरने का साहस उसमें कैसे आया था? यह शक्ति उसको किसने दी? प्रेम ने. यह तो मैं बाहर के विषय में कह रहा हूँ. यही प्रेम जब अन्तर में चला जाता है तो उसमें प्रेम की शक्ति आ जाती है. और यही प्रेम की शक्ति उसको मुक्ति देती है. मुक्ति क्या वस्तु है? जब प्रेम का अंत हो कर उसकी खिंचावट समाप्त हो जाती है, उस अवस्था का नाम मुक्ति है जिसे मिलन तथा मिलाप भी कहते हैं. और मुक्ति क्या है? मुक्ति में शांति है और प्रेम में आनन्द है. प्रेम के अन्त होने पर वही प्रेम शांति में परिणत हो जाता है और वहाँ शांति-मुक्ति है.

प्रेम की विद्या अविद्या, प्रेम की है औषधी,
क्या कहूँ कि यह सोग की है औषधी.

पं. पुरोत्तमदास! आज हजूर दाता दयाल की याद आ रही है. उन्होंने सागर को गागर में भर दिया है. प्रेम की समझ को विद्या कहते हैं. विद्या कहते हैं ज्ञान को. प्रेम करने का जो ढंग है वह अविद्या, अज्ञान और सोग की औषधि है. तुम देखते हो कि कई व्यक्ति मेरे पास आते हैं और कहते हैं कि बाबा जी जब हम बीमार हो जाते हैं, कोई औषधि नहीं खाते, केवल आपका प्रसाद खाने से ठीक हो जाते हैं. यदि कोई चिन्ता होती है तो आपकी फोटो के सामने खड़े होकर प्रार्थना करते हैं और हमारी चिन्ता दूर हो जाती है. अब मैं तो जाता नहीं. वह उनका प्रेम है. वह प्रेम उनके रोग और सोग की औषधि है. मेरा अपना अज्ञान प्रेम ने ही नाश किया. अपने दाता जी के आदेश अनुसार चलता था. उनसे प्रेम करता था और मेरी अविद्या चली गई.

प्रेम का प्याला पिया, जिसने वह मतवाला बना,
दुरमति जाती रही, भोला बना बाला बना.

मैंने यह ज्ञान सत्संगियों से प्राप्त किया. बम्बई से श्रीमती कृष्णा आयी थी. वह बताती है कि वह घर पर अकेली थी और दो लड़कियाँ थीं. आप चले आए इतना काम किया, हमको पता तक नहीं लगा और इतना समय व्यतीत हो गया और कैसे काम चल गया. जब मैं बाहर जाता हूँ तो मेरे साथ दो-चार व्यक्ति होते हैं. वे कहा करते हैं कि बाबा जी हमें न दिन याद रहता है, न तिथि याद रहती है, न होशियारपुर याद रहता है. भूले हुए रहते है. क्यों भूले हुए रहते हैं. प्रेम के कारण. सच्चा प्रेमी संसार को भूल जाता है. मास्टर मोहनलाल जी प्रायः कहा करते हैं कि वे उतने प्रेमी नहीं हैं जितना कि होना चाहिए. आपके पास आ जाता हूँ और संसार को भूल जाता हूँ. प्रेम भूल जाना ही भोला बनना है. भोला व्यक्ति वही होता है जिसको चिंता नहीं है और स्वाभाविक ही

काम करता है. तो प्रेम से चिन्ता समाप्त हो जाती है और वह भोला बन जाता है.
कैसी पूजा पाठ संध्या, कैसे धर्म और कर्म अब,
हट गये झगड़े मिला है, प्रेम का सत् मर्म अब.
सब कुछ छूट गया. जब प्रेम के रहस्य का पता लग गया, ये सब अपने आप ही छूट जाते हैं.
प्रेम है आनन्द दाता, प्रेम का प्याला रसाल,
मांगता है उसके बदले, शीश तन मन को कलाल.
जब व्यक्ति प्रेम लेता है तो उसके बदले ख़ुदी तथा अहंकार देना पड़ता है. तुमने दो सौ रुपये की साड़ी पहनी हुई है. तुम्हारा बच्चा मिट्टी में लतपत होकर आता है. क्या उस समय उस अमूल्य साड़ी का विचार करती हो? तुम अपने पोतों को गोद में लेते हो. वह तुम्हारे ऊपर मलमूत्र कर देते हैं. क्योंकि प्रेम है, सब कुछ भूल जाते हो. जो प्रेम देता है वह तुम्हारी ख़ुदी तथा अहंकार को लेता है. जब तक कोई अपना सीस न दे, सीस का अभिप्राय इस सिर से नहीं है अपितु मन के ध्यान का जो अहंभाव है, उसको लेता है.
जीते जी मर जाना हो, इस रास्ते में आओ तुम,
सहज में ही शम तितिक्षा, मुक्ति के फल पाओ तुम.
जीते जी मरना क्या है? जीवन में संघर्ष है, मरने पर समाप्त हो जाता है. न शरीर की गति रहती है और न मन सोचता है. तो प्रेम से संघर्ष समाप्त हो जाता है. कभी-कभी नन्दलाल जी आते हैं वे कहते हैं. बाबा जी! आपने मेरे सारे काम कर दिए. मुझे कोई चिन्ता नहीं, मुझे आपने तार दिया. इसका अभिप्राय यह है कि इनकी चिन्ता समाप्त हो गई. इसका नाम है जीते जी मर जाना.
काग से कोयल बनो, बगले से अब हो जाओ हंस,
थोड़ा ही जो हाथ आ जाए, तुम्हारे प्रेम अंश.
काग काएँ-काएँ करता है, उसको लोग पसन्द नहीं करते और कोयल को पसन्द करते हैं. थोड़ा भी यदि प्रेम मिल जाए तो तुम्हारी बातों से तुम्हारे घर में जो अशांति रहती है वह समाप्त हो जाएगी. बगुले का काम बैठे रहना है. जहाँ मछली आई, झट पकड़ ली. तो जिस व्यक्ति में प्रेम होता है, वह अपने स्वार्थ के लिए किसी को दुख नहीं देता.
प्रेम प्रेमी और प्रियतम, को मिला करता है एक,
प्रेम ही है ज्ञान धन, अरु प्रेम ही सच्चा विवेक.
मैंने उस मालिक से तथा हजूर दाता दयाल जी से प्रेम किया था. अब मुझे यह विचार ही नहीं आता कि दाता दयाल और थे और मैं और हूँ.
मन तू शुदम तू मन शुदी मन तन शुदम तू जां शुदी,
ता कस न गोयद बाद अज़ीं मन दीगरम तू दीगरी.
तो प्रेम की सब भावनाएं समाप्त होकर अब प्रेम की अंतिम दशा आ गई. प्रेमी और प्रियतम मिल गये. यह मेरा अस्तित्व जहां से निकला था, अकह, अगाध, अपार और अनामी से, अब मैं वही हो रहा हूँ. अब न साधन की आवश्यकता है और न अभ्यास की और न ही अब प्रेम की आवश्यकता है. भ्रम, संशय और शंका-सन्देह सब चले गए और मुझे शांति मिल गई.
प्रेम ही सुमिरन भजन है, प्रेम ही है ज्ञान ध्यान,
कर लो संगत प्रेमियों की, कुछ दिनों इसको पिछान.

इस वस्तु को प्राप्त करने के लिए जो प्रेमी जन है उनकी संगत, उनकी रेडियेशन से तुम्हारे अन्तर से प्रेम उत्पन्न होगा. यह प्रेमी बनने के लिये नियम हैं. अमेरिका से एक महिला आई थी. श्री ईश्वर चन्द्र शर्मा भी बैठे थे, मैंने कहा कि इसकी संगत से सब प्रेमी होते जाते हैं. तो वह कहने लगे कि जब से इसने आप की बातें पढ़ीं और आपका रूप इनके अन्तर आने लगा तब से बीस घराने इनके समीप आ गए हैं क्योंकि वह आपकी सच्ची भक्तिनी है. इसके अन्तर से भक्ति और प्रेम के भाव निकलते हैं. इसलिए दूसरे भी इससे आकर्षित होते हैं. यह है प्रेम. प्रेमियों की संगत से यह फल मिलता है.

प्रेम भव से पार हो जाने का नवका बन गया,
चित्त की दुचिताई हटी, दुविधा मिटी तन मन गया.
राधास्वामी प्रेम के हैं सिन्ध और हम बुन्द हैं,
बूंद जब उसमें मिला, तब फिर कहां तू और मैं.

तो राधास्वामी अवस्था है जहां से 'है पना' निकला था. जहां से धार अर्थात राधा निकली थी. वह शरीर में आई, गुरु मिले, जिन्होंने प्रेम की शिक्षा दी, कैसी शिक्षा? कि पहले अपने घर वालों, संबंधियों, पड़ोसियों और मित्रों से प्रेम करो. जो कुछ मैंने कहा वही हजूर दाता दयाल जी ने इस शब्द में कहा है. मुझे प्रसन्नता है कि जो कुछ अनुभव मैंने अपने जीवन में किया, इस शब्द से वह प्रमाणित हो गया और मेरी पुष्टि हो गई. गृहस्थी अपने घर या उस मालिक के घर पहुंचना चाहता है तो उस को पहले क्या करना चाहिए?

पुत्र पति संबंधियों से, प्रेम का व्यौहार कर,
घर में रह कर ही भजन और इस भजन से प्यार कर.
पाया शुभ अवसर न इसको, हाथ से खोना कभी,
मन की दुविधा मेट दे, निश्चय को अंगीकार कर.
उठते चलते बैठते, सुमिरन रहे सत नाम का,
नाम में हो जीवन तेरा, नाम का परचार हो.
भाग को अपने बढ़ा ले, सिन्ध बुन्द की गति परख,
बुन्द हो सत सिन्ध ऐसे, प्रेम का विस्तार कर.
राधास्वामी की दया ले, बन दया की मूरती,
शक्ति पा कर हो सुशीला, चित की दुचिता टार कर.

सुशीला नाम की कोई स्त्री होगी उसको यह पत्र लिख रहे हैं हजूर दाता दयाल जी. उसको उन्होंने यह तो नहीं कहा कि तुम पुत्र और पति को छोड़ दो, यह सार बात है.

प्रेम ही सार है, संसार में कुछ सार नहीं,
विश्व प्रेमी हमें बनाया, और कुछ दरकार नहीं.
गुन गाते हैं उनके, काम करते हैं उनके,
उन से बढ़ कर हमारे लिए, कोई मददगार नहीं............सब को राधास्वामी!